कश्मीरी की लोकप्रिय रामायण: रामावतारचरित

डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

कश्मीरी भाषा-साहित्य में रामकथा-काव्य रचने की सुस्पष्ट परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी के आस पास से देखने को मिलती है। कुल मिलाकर सात रामायणें लिखी गईं जिनके रचनाकाल के क्रम से नाम हैं-'रामावतारचरित` (१८४७ ई०),'शंकर-रामायण` (१८७०), विष्णुप्रताप रामायण'(१९०४-१४), 'आनंद रामावतारचरित'(१८८८), `रामायण-इ-शर्मा' (१९१९-२६), `ताराचंद रामायण' (१९२६-२७) तथा ``अमर-रामायण" (१९५०)। इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय कश्मीरी की प्रथम रामायण `रामावतारचरित' है जो प्रकाशित हो चुकी है। शेष रामायणें अप्रकाशित हैं अथवा उनका उल्लेख- मात्र मिलता है। `विष्णु प्रताप रामायण' (रचयिता पं० विष्णु कौल, रचनाकाल १९०४-१९१४) की हस्तलिखित पाण्डुलिपि (कलमी-नुस्खा) उपलब्ध है और विष्णुप्रताप रामायण का आलोचनात्मक अध्ययन शीर्षक से इस रामायण पर कश्मीर विश्वविद्यालय में १९७६ में शोधकार्य भी हुआ है।

ऊपर कश्मीरी की जिन उपलब्ध अनुपलब्ध रामायणों का उल्लेख किया गया, उनमें **`रामावतारचरित'** को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। भक्तिरस से ओतप्रोत रामकथा इसमें गायी गई है। `रामावतारचरित' के रचयिता कुरिगाम (कुर्यग्राम) कश्मीर के निवासी पं० प्रकाशराम हैं। १९ वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में इनका आविर्भाव हुआ बताया जाता है। सन् १८८८ ई० तक वे जीवित थे। सर जार्ज ग्रियर्सन ने इनका कविता-काल कश्मीर के गवर्नर सुखजीवन (१७५४-१७६२ ई०) का समय बताया है जो सही नहीं बैठता। प्रकाशराम ने २८ वर्ष की आयु में संवत् १९०४ तदानुसार १८४७ ई० में अपनी प्रसिद्ध काव्यकृति 'रामावतार चरित` की संरचना की थी। इस कृति की एक हस्तलिखित प्रति पर संवत् १९०४ स्पष्टतया अंकित है। इस आधार पर प्रकाशराम का जन्मकाल सन् १८१९ ई० बैठता है।

प्रकाशराम भगवती त्रिपुरसुन्दरी के अनन्य भक्त थे। उन्हीं की कृपा से उन्हें वाक्-शक्ति का अपूर्व वरदान प्राप्त हुआ था। कहते हैं कि वे नित्य देवी की पूजा करते तथा उनकी आराधना में घंटों बिताते। एक दिन खूब वर्षा हो रही थी। अंधेरा घिर आया था। प्रकाशराम को दूर से एक डोली अपनी ओर आती हुई दिखाई पड़ी। डोली के वाहकों ने प्रकाशराम को आवाज़ दी। प्रकाशराम जब डोली के निकट पहुंचे तो डोली का पर्दा ऊपर उठा। डोली में साक्षात् त्रिपुरसुन्दरी विराज रही थीं। प्रकाशराम के नेत्र प्रफुल्लित हो उठे। कुछ ही क्षणों के बाद भगवती डोली सहित अन्तर्धान हो गई। भगवद्-भक्ति का अनूठा प्रसाद पाकर प्रकाशराम का तन-मन झूम-झूम कर ईश-स्तुति में रम गया। प्रकाशराम की निम्नलिखित पांच रचनाओं का उल्लेख मिलता है-

(१) रामावतारचरित, (२) लवकुश-चरित, (३) कृष्णावतार, (४) अकनन्दुन और (५) शिवलग्न।

उक्त पांच रचनाओं में से केवल 'रामावतारचरित` तथा 'लवकुश-चरित` प्रकाशित हुए हैं। 'लवकुश-चरित` 'रामावतार-चरित` के अन्त में छाप दिया गया है।

प्रकाशराम के 'रामावतार-चरित` का मूलाधार वाल्मीकि कृत रामायण तथा 'अध्यात्म रामायण है। संपूर्ण कथानक सात काण्डों में विभक्त है। 'लवकुश-चरित` अन्त में जोड़ दिया गया है। कवि ने प्रमुखत: दो प्रकार की काव्य शैलियों का प्रयोग किया है: इतिवृत्तात्मक शैली और गीति-शैली। इतिवृत्तात्मक शैली में मुख्य कथा-प्रसंग वर्णित हुए हैं तथा गीति-शैली में वन्दना-स्तुति सम्बन्धी तथा अन्य भक्ति-गीत(लीलाएं) कहे गये हैं। इन गीतों में कवि का भक्त-हृदय इतना विहृउल हो उठा है कि कहीं-कहीं पर मूल कथा-प्रसंग इस उत्कृष्ट भक्तिभावना के वेग तले दब-से गये हैं।

'रामावतार-चरित` भारतीय काव्य-शास्त्रीय परंपरानुसार महाकाव्योचित लक्षणों से युक्त है। काव्यकृति के प्रारम्भ में कवि ने ईशवंदना इस प्रकार की है:

नमो नमो गजेन्द्राय एकदंतधराय च
नमो ईश्वर पुत्राय श्रीगणेशाय नमो नमः,
गोडन्य सपनुन शरण श्री राज गणीशस
करान युस छु रख्या यथ मनुष्य लूकस,
दोयिम कर सतगोरस पननिस नमस्कार
दियि सुय गोर पनुन येमि बवसरि तार।(पृ० २७)

(सर्वप्रथम गणेशजी की शरण में जाएं जो इस मनुष्य-लोक की रक्षा करते हैं। तत्पश्चात् सत्गुरू को नमस्कार करें जो इस भवसागर से पार लगाने वाले हैं।)

तुलसी की तरह ही प्रकाशराम की भक्ति दास्य-भाव की है। इसी से पूरी रामायण में वे कवि कम और भक्त अधिक दिखते है। 'रामावतारचरित` में सम्मिलित स्तुतियों, भक्ति गीतों, प्रार्थनाओं आदि से यह बात स्पष्ट हो जाती है। ध्यान से देखा जाए तो प्रकाशराम ने संपूर्ण रामकथा को एक आध्यात्मिक-रूपक के रूप में परिकल्पित किया है जिसके अनुसार प्राय: सभी मुख्य पात्र और कथासूत्र प्रतीकात्मक आयाम ग्रहण करते हैं। सत् और असत् का शाश्वत द्वन्द्व इस रूपक के केन्द्र में है। **'रामायनुक मतलब** (रामायण का मतलब) प्रसंग में कवि की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं:

गोरव गंडमच छि वथ, बोज़ कन दार,
छु क्या रोज़ुन, छु बोज़ुन रामावतार।
ति बोज़नअ सत्य बोंदस आनंद आसी,
यि कथ रठ याद, ईशर व्याद कासी।
ति ज़ानख पानु दयगत क्या चे़ह हावी,
कत्युक ओसुख चे,कोत-कोत वातनावी। (पृ० ३३)

(गुरूओं ने एक सत्पथ तैयार किया है, ज़रा कान लगाकर इसे सुन। यहां कुछ भी नहीं रहेगा, बस रहेगी रामवतार की कथा। इसे सुनकर हृदय आनंदित हो जाएगा, यह बात तू याद रख। इससे सारी व्याधियां दूर हो जाएंगी और तू स्वयं जान जाएगा कि प्रभु-कृपा से तू कहां से कहां पहुंच जाएगा।)

एक अन्य स्थान पर कवि कहता है--

सोयछ सीता सतुक सोथ रामअ लख्यमन
ह्यमथ हलूमत असत रावुन दोरज़न। (पृ० ३१)

(सु-इ़च्छा सीता है, सत्य का सेतु राम व लक्ष्मण हैं। हिम्मत हनुमान तथा असत्य रूपी दुर्जन रावण है।)

प्रकाशराम के राम लोक-रक्षक, भू-उद्धारक और पाप-निवारक हैं। वे दशरथ-पुत्र होते हुए भी विष्णु के अवतार हैं। पृथ्वी पर पाप का अन्त करने के लिए ही उन्होंने अवतार धारण किया है:-

रावण के हेतु अवतारी बनकर आए
भूमि का भार हरने को आए(पृ० १२०)

'रामावतरचरित` की कथा 'शिव-पार्वती` संवाद से प्रारंभ होती है। पूरी कथा आठ काण्डों: बालकाण्ड, आयोध्याकाण्ड, अरण्य-काण्ड, किष्किन्धा-काण्ड, सुन्दर-काण्ड, युद्ध-काण्ड उत्तर काण्ड तथा लवकुश-काण्ड में विभाजित है। इन काण्डों के अन्तर्गत मुख्य कथा-बिन्दुओं को मसनवी-शैली के अनुरूप विभिन्न उपशीर्षकों में बांटा गया है। इन उपशीर्षकों की कुल संख्या ५६ है। कुछ उपशीर्षकों के नामकरण देखिए: विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा, भरत को खड़ाऊं देना, शूर्पनखा को सज़ा देना, जटायु से युद्ध और सीता का कैद होना, लंका की तरफ फौजकशी, कुंभकर्ण के साथ जंग, मक्केश्वर का किस्सा, सीता को जलावतन करना आदि।

'रामावतारचरित` में वर्णित अधिकांश प्रसंग अतीव मार्मिक एवं हृदय-ग्राही बन पडे हैं जिससे कवि की विलक्षण काव्यप्रतिभा का परिचय मिल जाता है। अयोध्यापति दशरथ की संतान-कामना, कामनापूर्ति के लिए व्रतादि रखना, स्वप्न में भगवान विष्णु द्वारा वरदान देना आदि प्रसंग इस कश्मीरी रामायण में यों भावपूर्ण ढंग से वर्णित हुए हैं-

"वोथन सुलि प्रथ प्रबातन नित्य करान श्रान
रछन जोगेन, गोसान्यन सत्य थवान ओस ज़ान,
स्यठा रातस-दोहस लीला करान ओस
शरण सपनुन नारायण पानय टोठ्योस।(पृ० ३७)

(राजा दशरथ नित्य प्रभात-वेला में जागकर स्नानादि करते तथा साधु-सन्तों और जोगियों के पास आशीर्वाद लेने जाते। पुत्रासुख के अभाव में उनका मन सदैव चंचल रहता। एक रात स्वप्न में नारायण/विष्णु ने उन्हें स्वयं दर्शन दिए तथा कहा कि मैं शीघ्र तुम्हारे घर में जन्म ले रहा हूं।) वचनबद्धता के प्रश्न को लेकर दशरथ और कैकेयी के बीच जो परिसंवाद होता है, उसमें एक पित्तहृदय की शोकाकुल/वात्सल्ययुक्त भावाभिव्यक्तियों को मूर्त्तता प्राप्त हुई है-

युथुय बूज़िथ राज़ु बुथकिन्य पथर प्यव
त्युथुय पुथ साहिब ज़ोनुख सपुन शव,
अमा करुम ख्यमा सोज़न नु राम वनवास
मरअ तस रौस वन्य करतम तम्युक पास,

यि केंछा छुम ति सोरूय दिम ब तस

मै छुम अख रामजुव, छुम त्युतुय बस। (पृ० ७७)

(कैकेई का अंतिम कथन सुनते ही राजा लड़खड़ाते हुए अचेतावस्था में मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़े। दयार्द्र स्वर में उन्होंने कैकेई से विनती की-मुझपर दया कर, राम को बनवास न दिला। मैं उसके बिना ज़िन्दा न रह सकूंगा। वचन देता हूं कि मेरे पास जो कुछ भी है वह भरत को दे दूंगा।. . . मेरा तो बस एक राम ही सब कुछ है, बस एक राम जी!)

खब़र बूज़िथ गव जटायन खब़रदार

कफ़स फुटरुन त लारान गव ब यक़बार,

पुनुम चन्द्रस येलि बछुन ह्यथ चलान कीत

दौपुन तस ओय मरुत पापुक गोय हीत,

परकि दक सत्य छुस आकाशि त्रावान

ज़मीनस प्यठ अडजि छुस जोरअ फुटरावान।(पृ० १४५)

(खबर सुन सीता-हरण की/हुआ जटायु खब़रदार,/पूनम-चन्द्र को केतु द्वारा/ग्रसित जो देखा/तो छेड़ दिया/पापी से युद्ध ज़ोरदार। 'क्यों पाप करके मृत्यु को/बुला रहा है रे मूर्ख? आज होगा अंत तेरा/ मिटेगा तू रे धूर्त!/आकाश में उछाला, भू पर पटका/पंख के धक्को से उसने/कर दिया रावण का बुरा हाल,/हड्‍डियों का भुरकुस निकाल/कर दिया उसका हाल बेहाल।) **(भावानुवाद इन पंक्तियों का लेखक द्वारा)**

यद्यपि 'रामावतारचरित` की मुख्य कथा का आधार वाल्मीकि कृत रामायण है, तथापि कथासूत्र को कवि ने अपनी प्रतिभा और दृष्टि के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है। कई स्थानों पर काव्यकार ने कथा-संयोजन में किन्हीं नूतन (विलक्षण अथवा मौलिक) मान्यताओं की उद्घोषणा की है। सीता-जन्म के सम्बन्ध में कवि की मान्यता यह है कि सीता, दरअसल, रावण-मंदोदरी की पुत्री थी। मन्दोदरी एक अप्सरा थी जिसकी शादी रावण से हुई थी। उनके एक पुत्री हुई जिसे ज्योतिषियों ने रावण-कुल के लिए घातक बताया। फलस्वरूप मंदोदरी उसके जन्म लेते ही, अपने पति रावण को बताए बिना, उसे एक सन्दूक में बंदकर नदी में फिंकवा देती है। बाद में राजा जनक यज्ञ की तैयारी के दौरान नदी-किनारे उसे पाकर कृतकृत्य हो उठते हैं। तभी लंका में अपहृत सीता को देख मंदोदरी वात्सल्याधिक्य से विभोर हो उठती है। पंक्तियां देखिये:

तुजिन तमि कौछि क्यथ ह्यथ ललनोवन

गेमच कौलि यैलि लेबन लौलि क्यथ सोवुन

बुछिव तस माजि मा माज़ुक मुशुक आव

लबन यैलि छस बबन दौद ठींचि तस द्राव। (पृ० १४५)

(तब उस मंदोदरी ने उसे गोद में उठाकर झुलाया तथा पानी में फेंकी उस सीता को पुन: पाकर अपने अंक में सुलाया। अहा, अपने रक्त-मांस की गंध पाकर उस मां के स्तनों से दूध की धारा द्रुत गति से फूट पड़ी. . . .।)

'रामावतार चरित` में आई दूसरी कथा-विलक्षणता राम द्वारा सीता के परित्याग की है। सीता को वनवास दिलाने में रजक-घटना को मुख्य कारण न मानकर कवि ने सीता की छोटी ननद (?)को दोषी ठहराया है जो पति-पत्नी

के पावन-प्रेम में यों फूट डालती है। एक दिन वह भाभी (सीता जी) से पूछती है कि रावण का आकार कैसा था, तनिक उसका हुलिया तो बताना। सीता जी सहज भाव से कागज़ पर रावण का एक रेखाचित्रा बना देती है जिसे ननद अपने भाई को दिखाकर पति-पत्नी के पावन-प्रेम में यों फूट डालती है:-

"दोपुन तस कुन यि वुछ बायो यि क्या छुय
दोहय सीता यथ कुन वुछिथ तुलान हुय,
मे नीमस चूरि पतअ आसि पान मारान
वदन वाराह तअ नेतरव खून हाराना। (पृ० ३९९)

(रावण का चित्र दिखा कर- देखो भैया, यह क्या है! सीता इसे देख-देख रोज़ विलाप करती है। जब से मैंने यह चित्र चुरा लिया है, तब से उसकी आंखों से अश्रुधारा बहे जा रही है। यदि वह यह जान जाए कि ननद ने उसका यह कागज़ चित्र चुरा लिया है तो मुझे ज़िन्दा न छोड़ेगी . . . .।)

'रामावतारचरित` के युद्धकाण्ड प्रकरण में उपलब्ध एक अत्यन्त अद्भुत और विरल प्रसंग 'मक्केश्वर-लिंग` से सम्बंधित है जो प्राय: अन्य रामायणों में नहीं मिलता है। यह प्रसंग जितना दिलचस्प है, उतना ही गुदगुदाने वाला भी। शिव रावण की याचना करने पर उसे युद्ध में विजयी होने के लिए एक लिंग (मक्केश्वर) दे देते हैं और कहते हैं कि जा, यह तेरी रक्षा करेगा, मगर ले जाते समय इसे मार्ग में कहीं पर भी धरती पर न रखना। लिंग को अपने हाथों में आदरपूर्वक थामकर रावण आकाशमार्ग द्वारा लंका की ओर प्रयाण करते हैं। रास्ते में उन्हें लघु-शंका की आवश्यकता होती है। वे आकाश से नीचे उतरते हैं तथा इस असमंजस में पड़ते हैं कि लिंग को वे कहां रखें? तभी ब्राह्मण-वेश में नारद मुनि वहां पर प्रगट होते हैं जो रावण की दुविधा भांप जाते हैं। रावण लिंग उनके हाथों में यह कहकर संभला जाते हैं कि वे अभी निवृत्त होकर आ रहे हैं। रावण लघुशंका से निवृत्त हो ही नहीं पाते! धारा रुकने का नाम नहीं लेती। संभवत: यह प्रभु की लीलामाया थी। काफी देर तक प्रतीक्षा करने के उपरान्त नारदजी लिंग को धरती पर रखकर चले जाते हैं। तब रावण के खूब प्रयत्न करने पर भी लिंग उस स्थान से हिलता नहीं है और इस प्रकार शिव द्वारा प्रदत्त लिंग की शक्ति का उपयोग करने से रावण वंचित हो जाते हैं। (पृ० २९५-२९७)

कुल मिलाकर 'रामावतारचरित` कश्मीरी भाषा-साहित्य में उपलब्ध रामकथा-काव्य-परंपरा का एक बहुमूल्य काव्य-ग्रन्थ है जिसमें कवि ने रामकथा को भाव-विभोर होकर गाया है। कवि की वर्णन-शैली एवं कल्पना शक्ति इतनी प्रभावशाली एवं स्थानीय रंगत से सराबोर है कि लगता है कि 'रामावतार चरित` की समस्त घटनाएं अयोध्या, जनकपुरी, लंका आदि में न घटकर कश्मीर-मंडल में ही घट रही हैं। 'रामावतारचरित` की सबसे बड़ी विशेषता यही है और यही उसे 'विशिष्ट` बनाती है।

'कश्मीरियत की अनूठी रंगत में सनी यह काव्यकृति संपूर्ण भारतीय रामकाव्य-परंपरा में अपना विशेष स्थान रखती है।

-डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

पूर्व-अध्येता,
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला